समाज सुधार के ढंग

और

इस्लाही कमेटी की ज़िम्मेदारियाँ

(खुल्फ़ा-ए-किराम के इर्शादों की रोशनी में)

संकलन व प्रस्तुति

मर्कज़ी इस्लाही कमेटी, भारत

नाम पुस्तिका	:	समाज सुधार के ढंग और इस्लाही कमेटी की ज़िम्मेदारियाँ
संकलन व प्रस्तुति	:	मर्कज़ी इस्लाही कमेटी, भारत
अनुवादक	:	अलीहसन एम.ए
प्रथम संस्करण	:	अगस्त 2016
संख्या	:	1000
प्रकाशक	:	मंसूबा-बन्दी कमेटी भारत, क़ादियान
प्रैस	:	फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रैस, क़ादियान

आवश्यक निवेदन

याद रहे कि हमने बुराई को होने से पहले रोकना है इसके लिए हिकमते अमली तैयार करनी है। हर बुराई या बीमारी जिसके पैदा होने का अंदेशा हो उसकी रोकथाम और इलाज के लिए सारे सम्भावित हल अपनाना कमेटी की अहम ज़िम्मेदारी है।

चूंकि यह तरबियत और निगरानी का काम है इसलिए हमदर्दी, मुहब्बत ख़ैरख़्वाही और दुआओं के द्वारा इस्लाही कार्यवाही करें। अगर किसी जगह कोशिश के बावजूद सहयोग न मिले तो मर्कज़ को सूचित करें। कमेटी के अन्दर बहस में आने वाले तमाम मामलात जमाअत के मेम्बरों के पास अमानत हैं। बाहर उनका ज़िक्र करना बिल्कुल सही नहीं।

इस्लाही कमेटी की कार्य प्रणाली

(इर्शाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाह)

मैने एक इस्लाही कमेटी क़ायम की थी और राष्ट्रीय स्तर पर सारे देशों को यह हिदायत दी थी कि आप इस्लाही कमेटियां क़ायम करें और बुराइयों की निशानदही करके इस से पहले कि वे भयानक रूप धारण कर लें उनको दूर करने की कोशिश करें और अपने अख्लाकी मरीज़ों को ठीक करने कि कोशिश करें...... मैंने जो नसीहत की थी वह यह थी कि इस्लाही कमेटी दूरदर्शी और संवेदनशील लोगों पर आधारित होनी चाहिए। वे बुराइयों का गुप्त रूप से पता करें कि कहाँ-कहाँ जन्म ले रही हैं अगर पता न भी लगे तब भी उनकी संवेदनशक्ति यह पता लगा ले कि कहीं कोई बुराई के पैदा होने का अवश्य खतरा मौजूद है फिर उनको फैलने से पहले दूर करें। यदि आप इन्तिज़ार करते रहें कि कहीं फसाद हो जाएँ कहीं दंगे हो जाएँ कहीं कोई क़त्लोग़ारत हो जाए

फिर इस्लाही कमेटी हरकत में आए तो यह इस्लाही कमेटी नहीं बल्कि पुलिस कमेटी बन जाएगी.... और केवल एक मर्कज़ी इस्लाही कमेटी नहीं बल्कि इलाक़ाई और बड़े शहरों में शहर की सतह पर भी बुद्धिमान लोगों पर आधारित इस्लाही कमेटियाँ कायम होना अति आवश्यक हैं। जो हर प्रकार की बुराइयों पर इस तरह नज़र रखें कि अभी भोले-भोले लोग उन्हें समझ ही न पाएँ..... आप आसार मालूम करें कि कौन-कौन सी बुराइयाँ फैलने वाली हैं, फैल सकती हैं और उनको दूर करने के लिए जब आप को कोशिश करनी होगी तो फिर इस्लाही कमेटी का काम नहीं है। इस्लाही कमेटी का काम है महसूस करना और जमाअत को आगाह करना मज्लिस आमला में बातें पेश करना और फिर मज्लिस आमला को अपनी सारी आमला की ओर से केवल एक ओहदेदार को नहीं बल्कि कभी कभी दो-तीन-चार ओहदेदारों को काम पर लगाना होगा। कहीं इस्लाह व इर्शाद के सेक्रेटरी का बीच में अमल-दखल हो जाएगा कहीं आप को कुछ परिस्थितियों में फाइनेन्स की जरूरत होगी। कुछ लिटरेचर छापना है कहीं दौरे करवाने होंगे। मुरब्बियों के निजाम को हरकत में लाना होगा। तात्पर्य यह कि बहुत से सम्भावित हल हैं। जिनके लिए कभी-कभी मज्लिस आमला में ग़ौर करना ज़रूरी हुआ करता है। अतः ऐसे विषयों को मज्लिस आमला में रखें।

(खुत्बात-ए-ताहिर जिल्द 13 पृष्ठ 339-341)

कमेटी का कर्तव्य हो कि वह यह देखती रहे कि आसार के लिहाज़ से किस खानदान में कमजोरियां आ रही हैं। किन की बेटियां बेपरवाह होती चली जा रही हैं। किन के लड़के बाहर की ओर रुख कर चुके हैं और उनका सम्बन्ध जमाअत से मुहब्बत की बजाय धीरे-धीरे कट-कर गैरों की मुहब्बत की ओर जा रहा

है। उन लोगों पर नज़र रख कर उन्हें प्यार और मुहब्बत से वापस लाना इसकी अपेक्षा बहुत आसान है कि जब मामला हद से गुज़र जाए और बुराइयां किसी में भर जाएँ। उस समय उन बुराइयों को नोचकर जिस्म से बाहर निकाल फेंकना बहुत मुश्किल है.......।

(खुत्बात-ए-ताहिर जिल्द 11 पृष्ठ 310-311)

"इन (इस्लाही कमेटियों) को इख़्तियार है और हक है कि अपने-अपने दायरे में मज्लिस खुद्दामुल अहमदिय्या, मज्लिस अन्सारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह से पूरा पूरा फायदा उठायें। वे यदि उचित समझें तो कुछ मामलों को खुद्दाम के द्वारा हल करें और कुछ को लजना इमाइल्लाह के द्वारा हल करें। कई जगह तीनों को एक साथ-मिल कर कोशिश करनी पड़ेगी। एक खानदान का मामला है। वहाँ नेक असर डालने के लिए खुद्दाम को भी हरकत देनी होगी और अन्सार को भी और लजना को भी।"

(खुत्बात-ए-ताहिर जिल्द 11 पृष्ठ 311)

"आप सुधार की कोशिश करें। पहला तक़ाज़ा इंसाफ़ का है, इंसाफ़ पर कायम रहें। फिर आप के अंदर सुधारक बनने की सलाहियत पैदा होगी और सुधारक बने....... सुधार के समय फ़साद बढ़ने का इंतज़ार न करें बल्कि आसार से पहचाने कि कहाँ कहाँ फ़साद के आसार पैदा हो रहें हैं। उन ख़ानदानों तक पहुंचें, उन नौजवानों तक पहुंचें, उन बड़ों तक पहुंचें और इस से पूर्व की उनका क़दम इतना आगे निकल जाए कि आप भाग कर भी उनको पकड़ न सकें उन तक पहुंचे और प्यार के साथ घेर-कर उनको वापस ले आयें। उनके साथ-साथ आप दूसरों के सुधार की ओर भी ध्यान दें तो फिर अल्लाह तआला का यह वादा आप

के हक़ में ज़रूर पूरा होगा कि आप के फैज़ (उपकार) से कौमें बचाई जाएँगी।"

(खुत्बात-ए-ताहिर जिल्द 11 पृष्ठ 314)

आदेश हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस

(अल्लाह उनकी सहायता करे)

4 सितम्बर 2005 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने फरमाया यह गौर होना चाहिए कि किस-किस सेंटर में नमाज़ में कमी है या जो पहले मस्जिद आ रहा था अब नहीं आ रहा। उसकी औलाद नहीं आ रही, क्या वजह है? फिर इस्लाही कार्यवाही हो। फिर यह जायज़ा लें कि इस्लाह का जो तरीका सोचा था उसमें सफलता नहीं हुई तो फिर आगे सोचें कि किस तरह इस्लाह हो सकती है।

सेक्रेटरी तरबियत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि कितनी जमाअतों ने आपको सुस्त लोगों की सूची दी है और आपने वह सूची आगे मुरब्बियों को दी है। हुज़ूर अनवर ने कहा जब ऐसे लोगों की लिस्ट ही नहीं है तो फिर किस तरह काम होगा और किस तरह इस्लाही कार्यवाही होगी। हुज़ूर ने कहा कि इस बारे में इस्लाही कमेटी ने क्या कार्य किया है। हुज़ूर अनवर ने कहा कि पहले सूचियाँ बनाएँ फिर व्यक्तिगत रूप से सर्वे करें। सम्पर्कों के बाद उनको समझाया जाए। हुज़ूर ने फरमाया कि विधिवत रिज़ल्ट आना चाहिए कि कितनों के बारे में शिकायत थी कितनों की इस्लाह हुई है उनका सहयोग मिला है । हुज़ूर अनवर ने फरमाया

कोशिश के बावजूद जिनका सहयोग नहीं मिल सका तो उनकी सूची मुझे भिजवाएँ।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 14 अक्तूबर 2005 ई.)

13 सितम्बर 2005 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया स्वीडन के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने फरमाया आप अपनी इस्लाही कमेटी को भी *Active* करें। हुजुर ने फरमाया कि इस्लाह का काम बहुत बड़ा काम है किसी की इस्लाह करने में कदापि नहीं थकना बल्कि चार हज़ार बार भी करना पड़े तो करें न थकना है न मायूस होना है नरमी से समझाते चले जाना है।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 28 अक्तूबर 2005 ई.)

9 जून 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला लजना इमाइल्लाह जर्मनी के साथ मीटिंग

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि लजना अपनी एक इस्लाही कमेटी बना सकती है जिसमें मेम्बर नेशनल सदर लजना, सदर मुक़ामी, नायब सदर, सेक्रेटरी तरबियत, सीनियर मेम्बर लजना होंगी। लेकिन यह कमेटी केवल उन केसों को डील कर सकेगी जिनका सम्बन्ध लजना से है। फरमाया कि कई जगहों पर लड़के भी *Involve* हो जाते हैं ऐसे मामलात हर हाल में मर्कज़ी इस्लाही कमेटी में जाएँगे।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 जुलाई 2006 ई.)

5 मई 2008 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया नाईजीरिया के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने नेशनल सेक्रेटरी तरबियत से फरमाया कि नेशनल लेवल पर और लोकल लेवल पर इस्लाही कमेटियां बनाएँ। यदि कोई तरबियत कमेटी क़ायम है तो क्या काम करती है। बाकायदा इस्लाही कमेटियां बनाएँ। सेक्रेटरी तरबियत स्वयं कमेटी का सदर होता है (अब हज़रत खालिफतुल मसीह अल खामिस अय्य्दुहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने भारत के लिए अमीर / सदर को इस्लाही कमेटी का सदर मुक़र्रर फ़रमाया है।) और उसके मेम्बरों में मुबल्लिग़ इन्चार्ज सदर अन्सारुल्लाह सदर खुद्दामुल अहमदिया, लजना का नुमाइन्दा और जमाअत का एक मेम्बर (जो इस काम के लिए उचित हो) शामिल हैं। फ़रमाया यह कमेटियाँ हर जगह बनाएँ। इस तरह आप बहुत से मामले हल कर सकते हैं।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 11 जुलाई 2008 ई.)

5 मई 2008 ई.

मुबल्लिगीन सिलसिला जमाअत अहमदिया नाईजीरिया के साथ मीटिंग

इस्लाही कमेटियों के बारे में हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमायी कि यह नहीं कि मामला उठे तो फिर देखें मामला से पहले हालात पर नजर होनी चाहिए कि यहाँ से मामला पैदा हो सकता है। मामला को हद से निकलने से पहले उसकी इस्लाह करना ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :- जो ओहदेदार बद-दियानती करते हैं उनको ओहदों से फ़ारिग करें उनसे कोई खिदमत न लें।

मुबल्लिग़ का काम है कि उनकी इस्लाह करें उनको इस्लामी शिक्षा बताएँ और उनकी तरबियत करें मामला को हद से निकलने से पहले उसकी इस्लाह करना ज़रूरी है।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 11 जुलाई 2008 ई.)

7 जून 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने एक तरबियती बात की तरफ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि अपने इज्लासों और मजलिसों की बातों की हिफाज़त किया करें यह बहुत बुनियादी बात है मज्लिसों की बातें अमानत होती हैं उनका पास रखना चाहिए।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 जुलाई 2006 ई.)

ओहदेदार हर बात को नज़र अन्दाज़ न किया करें

हमेशा मर्ज़ की निशानदही होने पर उसे तुरंत पकड़ें और वहीं उस को उखाड़ फेकें। ओहदेदार हर बात को नज़र अन्दाज़ न किया करें बल्कि प्रारम्भ में ही हर बुराई को रोकने की कोशिश होनी चाहिए और कदापि उसे पनपने और फैलने नहीं देनी चाहिए या फिर कम से कम मुझे उसकी सूचना देनी चाहिए ताकि मैं खुत्बे के द्वारा उस बुराई को रोकने की कोशिश करूँ मर्कज़ी इस्लाही कमेटी भी इस तरफ़ ध्यान दे और यही हिदायत सारी मुकामी इस्लाही कमेटियों को भी भिजवाएँ और उन्हें आदेश दें कि इसके अनुसार वह अपनी जमाअतों में जायज़ा लेते रहा करें और हर इस्लाह करने योग्य मामले पर तुरंत कार्यवाही कर के आपको उसकी रिपोर्ट भिजवाया करें। पर्दापोशी का यह मतलब

नहीं कि बुराई को इतना छुपाया जाए कि मुझ तक भी उसकी खबर न पहुंचे। बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि बुराई को खुले आम न बयान किया जाए। अगर ओहदेदार किसी बात को छुपाते हैं तो वे अपनी ज़िम्मेदारी से ख़यानत करते हैं। इस सन्दर्भ में जो रिपोर्टें मुझे आती हैं उनसे पता लगता है कि जैली तन्ज़ीमों के भी और जमाअत के ओहदेदार भी अपनी ज़िम्मेदारी का हक अदा नहीं कर रहे हैं। यह रुझान दिखाई देता है कि कई बड़ों कि ग़लतियों को नजर अन्दाज़ कर दिया जाता है और कई छोटों को फ़ौरन सज़ा दिलवा दी जाती है। ऐसे सारे मामलात को यहाँ भिजवाना अपका काम है और खलीफ़ा-ए-वक्त का काम है कि वह जिस तरह चाहे फैसला करे।

इस्लाही कमेटी के कामों के बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमतुल्लाह ने जो हिदायतें दी थीं और जो मैनें दी हैं उन सबको इकट्ठा करके जमाअतों को भिजवाएँ। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों की नेशनल मज्लिस आमला और जैली तन्ज़ीमों की मज्लिस आमलाओं को भी कभी-कभी मैंने हिदायतें दी हुई हैं जो अलफ़ज़ल और दूसरे अख़बारों में छप चुकी हैं उनको भी एकत्र कर लें। उनकी दृष्टि से फिर इस्लाही कमेटियों को मुक़ामी और मर्कज़ी सतह पर काम करना चाहिए।

(ख़त हुज़ूर अनवर दिनाँक 05-11-2010)

31 दिसम्बर 2004 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया फ्रांस के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि *M.T.A* भी हर घर में होना चाहिए खुत्बा सुनने की ओर केवल ध्यान दिलाना काफी नहीं। बल्कि

विधिवत *Data* इकट्ठा करें की कितने लोगों ने सुना। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अधिकतर उन घरों में समस्याएँ और झगडे पैदा होते हैं जो खुत्बे नहीं सुनते और जो सुनते हैं वे ध्यान से नहीं सुनते।

(अल–फ़ज़ल इंटरनेशनल 11 फ़रवरी 2005 ई.)

3 मई 2005 ई.

मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया केनिया के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हर मज्लिस में विधिवत तरबियती क्लासें लगनी चाहिएँ। खुद्दाम को क़ुरआन करीम पढ़ना सिखाया जाए नमाज़ और उसका तर्जुमा सिखाया जाए दीनी मालूमात की जानकारी हो। नमाज़ों की अदायगी की ओर ध्यान हो। फरमाया अपनी तरबियती क्लासों में मुबल्लिगों और मुअल्लिमों से मदद लिया करें।

(अल–फ़ज़ल इंटरनेशनल 20 मई 2005 ई.)

3 मई 2005 ई.

नेशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह केनिया के साथ मीटिंग

हुज़ूर ने क़ायद तरबियत को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आप इस बात की कोशिश करें कि हर नासिर 5 नमाज़ें बाजमाअत अदा करे। नमाज़ जुमा में विधिवित शामिल हों। ख़लीफतुल मसीह के खुत्बों को विधिवित सुनें। जो नाजरा क़ुरआन करीम पढ़ सकते हैं वह क़ुरआन करीम की रोजाना कम से कम दो रुकूअ की तिलावत करें। जो कुरआन करीम नाज़रा पढ़ना नहीं जानते उनके लिए स्पेशल दर्स का प्रोग्राम हो। जो अच्छे स्वर में पढ़ने वाला है वह कम से कम दो रुकूअ तिलावत करे।

(अल–फ़ज़ल इंटरनेशनल 20 मई 2005 ई.)

27 जून 2005 ई.

नेशनल मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया U.S.A के साथ मीटिंग

मोहतमिम तरबियत को हुज़ूर अनवर ने आदेश दिया कि जिन खुद्दाम से आपका सम्पर्क नहीं है उनसे संपर्क करने के लिए प्लान बनाएँ। उन खुद्दाम का *Data* इकट्ठा करें जो मस्जिद नहीं आते और संपर्क नहीं रखते। इस तरह खुद्दाम को अपने निकट कर के साथ लायें।

हुज़ूर अनवर ने कहा खुद्दाम को मस्जिद में लाने के लिए आप *Attraction* पैदा करें।

इस-पर हुज़ूर अनवर को बताया गया कि देश में कुल 60 जमाअतें हैं जिनमें 40 में विधिवत रूप से जमाअती सेंटर मौजूद हैं जहाँ खेलों इत्यादि के प्रोग्राम रखे जाते हैं।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 अगस्त 2005 ई.)

5 जुलाई 2005 ई.

नेशनल मज्लिस आमला कनाड़ा के साथ मीटिंग

शोबा तरबियत को हुज़ूर अनवर ने आदेश दिया कि *M.T.A* का जायज़ा लें कि कितने लोग सुनते हैं और कितने नहीं। कई घरों में *M.T.A* नहीं है। कई जगहों पर डिश लगाने की भी मजबूरी है उनका भी जायज़ा लें कि वे किस तरह खुत्बा सुनते हैं या कैसेट इत्यादि देखते हैं। फ़रमाया कोई विशेष तरबियती विषय हो तो उसको छपवा-कर घरों में भिजवाया जा सकता है। जो कारों पर यात्रा करने वाले हैं उनको आडियो कैसिटें उपलब्ध की जा सकती हैं।

हुज़ुर ने फ़रमाया जो मस्जिद में आते हैं उनकी दो कैटेगरियाँ हैं एक वह जो सहयोग करने वाले हैं और दूसरी वह जो आते तो

हैं लेकिन उनकी ओर से सहयोग नहीं होता। फिर फ़रमाया तीसरे वे लोग हैं जो मस्जिद आते ही नहीं हैं या बहुत कम आते हैं और उनका निज़ाम से कोई लगाव भी नहीं है। ऐसे लोगों की तरबियत के लिए ज़्यादा प्रोग्राम होने चाहिएँ। अतः अपने तरबियती प्रोग्रामों में इस दृष्टि को मद्देनज़र रखें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :- कई प्रोग्रामों में आप जैली तन्ज़ीमों से मिलकर उनके सहयोग से अच्छी सूरत पैदा कर सकते हैं या उनके प्रोग्रामों में सहयोग करें तो अच्छी सूरत पैदा हो सकती है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अपने जैली तन्ज़ीमों को प्रोग्राम बनाकर नहीं देना बल्कि उनके अपने प्रोग्रामों में उनकी सहायता करें।

हुज़ुर अनवर ने नेशनल सेक्रेटरी तरबियत से इस्लाही कमेटी के कामों की भी रिपोर्ट मांगी और कहा यह बहुत बड़ा काम है। समस्याएं बढ़ रही हैं इस लिए इस ओर विशेष ध्यान दें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 19 अगस्त 2005 ई.)

11 सितम्बर 2005 ई.

नेशनल मज्लिस आमला डेनमार्क के साथ मीटिंग

सेक्रेटरी तरबियत को हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जब तक ख़ानदानों से व्यक्तिगत सम्पर्क पैदा न होंगे उस समय तक तरबियत के फल नहीं मिल सकते। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मस्जिद में आने वाले तो वही लोग होते हैं जिनका पहले से ही जमाअत से सम्बन्ध और लगाव होता है। देखना यह है कि जो लोग मस्जिद नहीं आते उनको किस तरह लाना है। उनके लिए प्रोग्राम बनाने चाहिएँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ऐसे लोगों को वापिस लाने के लिए मज्लिस मिल बैठकर सोचें और प्रोग्राम बनाएँ। फिर इस पर अमल दरामद की रिपोर्ट आनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके यहाँ संख्या बहुत थोड़ी है। इसलिए जो भी पीछे हटा हुआ होता है पता लग जाता है। उसको लाना चाहिए। ऐसा प्रोग्राम बनाएँ कि उनके मिज़ाज के अनुसार उनको निकट लाने कोई कोशिश की जाए। नौजवान अपने प्रोग्राम बनाएँ और लजना अपने प्रोग्राम बनाएँ कि उनको कमज़ोर परिवारों को किस तरह साथ मिलाना है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ओहदेदार अपना भी जायज़ा लें अपने घरों में ही ठीक हो जाएँ तो बरकत घरों में पड़ती है। अपने घरों में भी जायज़ा लेना चाहिए। फिर फ़रमाया यहाँ मस्जिद में अपनी मज्लिसों के अतिरिक्त ऐसे प्रोग्राम हों जो नौजवानों की दिलचस्पी का कारण हों। कोई विषय रख लें जिस पर विचार व्यक्त हों। उनमें दौड़ खेलों इत्यादि के प्रोग्राम हों। फ़रमाया आप नसीहत तो कर सकते हैं लेकिन सख्ती नहीं कर सकते। अतएव नसीहत करते चले जाएँ। फ़रमाया हर अहमदी बच्चे की तरबियत करनी चाहिए। अपने घर से तरबियत शुरू करें। फ़रमाया कि इन्टरनेट और टी.वी के अशिष्ट और गंदे प्रोग्राम बहुत बड़ी बीमारी हैं। अगर माँ बाप घर में समय न दें तो बच्चे बाहर सुकून ढूँढ़ते हैं फिर गलत संगति मिल जाती है। इस समाज में रहना है तो साधारण हालतों से ज्यादा कुर्बानियां देनी पड़ेंगी। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यदि घर से तरबियत होगी माँ, बाप, नमाज़ें पढेंगे, क़ुरआन क़रीम की तिलावत करेंगे तो बच्चों पर भी असर पड़ेगा और वे भी उसी तरह करेंगे।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 21 अक्तूबर 2005 ई.)

14 सितम्बर 2005 ई.

मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया स्वीडन के साथ मीटिंग

मोहतमिम तरबियत को फ़रमाया कि, नमाज़ों की हाजिरी की ओर ध्यान दें आपको पता होना चाहिए कि कितने खुद्दाम ऐसे हैं

जो नमाज़ पढ़ते हैं और क़ुरआन पढ़ने वाले कितने हैं। जो मस्जिद नहीं आते उनको प्यार से समझाएं। आपके पास सारा *Data* इकटठा होना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो आपकी बात नहीं मानते तो उन–पर उनके किसी दोस्त की ड्यूटी लगाएँ कि वह उनसे संपर्क करे और उसका मस्जिद से सम्पर्क क़ायम करवाए।

(अल–फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 अक्तूबर 2005 ई.)

7 जनवरी 2006 ई.

मज्लिस आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत के साथ मीटिंग

मोहतमिम तरबियत को हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने अपनी 800 मज्लिसों की तरबियत करनी है। अपने प्रोग्रामों का जायज़ा लें। अपने तरबियती लाह्य अमल का जायज़ा लें, जायज़ा लें कि कितने ख़ुद्दाम हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं, आपकी मज्लिसों की रिपोर्ट में शोबा तरबियत के अन्तर्गत उसका वर्णन होना चाहिए और रिपोर्ट आनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फ़ज्र और इशा की नमाज़ में कितने ख़ुद्दाम आते हैं मज्लिसों से इसकी भी रिपोर्ट मंगवाएँ। कितने पाँचों नमाज़ पढ़ते हैं कितने मस्जिद में आकर पढ़ते हैं कितने तिलावत क़ुरआन करीम करते हैं। निजामे वसीयत में कितने शामिल हैं आपके पास यह सारी रिपोर्ट होनी चाहिए।

(अल–फ़ज़्ल इंटरनेशनल 3 मार्च 2006 ई.)

7 अप्रैल 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला सिंगापुर के साथ मीटिंग

आपने सेक्रेटरी तरबियत को फ़रमाया कि जो लोग मस्जिद में आते हैं उनकी तरबियत के लिए तो प्रोग्राम होते हैं लेकिन जो

मस्जिद में नहीं आते, संपर्क नहीं रखते उनकी तरबियत के लिए क्या प्रोग्राम होते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उनकी तरबियत के लिए भी प्रोग्राम बनाएँ। ऐसे लोग जिनके पूर्वज अहमदी थे लेकिन उनकी संतानों से अब सम्पर्क नहीं है उनसे सम्पर्क बनाएँ और उनको मस्जिद लाएँ फिर यह सम्पर्क हमेशा रखें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 28 अप्रैल 2006 ई.)

8 अप्रैल 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी तरबियत से पूछा कि आप के सालाना प्रोग्राम क्या हैं। फिर कहा आप तरबियत की ओर अधिक ध्यान दें। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि देश में जहाँ-जहाँ जमाअत की मस्जिदें और नमाज़ के सेन्टर हैं वहाँ अहमदी कितनी-कितनी दूर से आते हैं इस पर बताया गया कि देहातों में तो सेंटरों के निकट रहते हैं परन्तु शहरों में काफी दूर पर रहते हैं। फिर हुज़ूर अनवर ने पूछा किस नमाज़ में ज्यादा हाज़िरी होती है। और कितने प्रतिशत लोग शामिल होते हैं। हर जमाअत के सेक्रेटरी तरबियत को कहें कि वे आपको हर नमाज़ की हाजिरी के बारे में विधिवत रिपोर्ट भिजवाएँ।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 5 मई 2006 ई.)

18 अप्रैल 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया आस्ट्रेलिया के साथ मीटिंग

मोहतमिम तरबियत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि खुद्दाम की सारी संख्या में से पाँचों समय की नमाज़ें कितने पढ़ते हैं और

कितने बाजमाअत पढ़ते हैं। क्या हर मज्लिस में मर्कज़ के अलावा भी सेंटर है फिर आपने कहा जो खुद्दाम कमज़ोर हैं और नमाज़ों में नहीं आते उनको नमाज़ों में साथ लाने के लिए मज़बूत खुददामों को साथ लगाएँ ऐसे खुद्दाम हों जो उनको नमाज़ी बनाने वाले हों। ऐसे नहीं के स्वयं भी उनके साथ बेनमाज़ी हो जाएँ।

फिर हुज़ूर ने पूछा कि कितने खुद्दाम ऐसे हैं जो *M.T.A* पर खुत्बा सुनते हैं। फिर फ़रमाया जो खुत्बा नहीं सुनते उनके लिए प्लान बनाएँ। फिर हुजुर ने पूछा क़ुरआन पढने वाले खुद्दाम कितने हैं, जो हमेशा नहीं पढ़ते वे कितने हैं, जो महीने में 15 दिन पढ़ते हैं उनकी संख्या कितनी है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो तिलावत क़ुरआन करीम नहीं करते वे 15 दिन तो करने वाले हों। जब महीने में 15 दिन तिलावत करेंगे तो उनको फिर हमेशा की आदत पड़ जाएगी।

हुज़ूर अनवर ने खुद्दाम की मर्कज़ी मज्लिस आमला से भी उनकी नमाज़ों के बारे में पूछा और कहा जो मेम्बर कम से कम एक नमाज़ भी बाजमाअत नहीं पढ़ता वह दूसरों को क्या कहेगा? फिर हुज़ूर अनवर ने आमला के मेम्बरों से पूछा कि प्रतिदिन तिलावत करने वाले कितने हैं? फिर आपने कहा कि रोजाना तिलावत करने की आदत डालें और जो खुद्दाम दूर हट गए हैं उनको उनके दोस्तों के द्वारा निकट लाने की कोशिश करें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 26 मई 2006 ई.)

18 अप्रैल 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया आस्ट्रेलिया के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी साहिब तरबियत से पूछा कि आपका साल भर का तरबियती प्रोग्राम क्या है? जो लोग पीछे हटे हुए हैं उनकी क्या तरबियत कर रहे हैं, उनके लिए क्या प्रोग्राम बनाया गया है। उनसे संपर्क के लिए क्या किया है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया की एक सम्पर्क है ओहदेदार की हैसियत से और मेल जोल है भाई और हमदर्दी की हैसियत से। आवश्यक नहीं कि मुरब्बी या अमीर या सेक्रेटरी तरबियत ऐसे लोगों से ख़ुद सम्पर्क करने जाएँ। आप यह देखें कि ऐसे लोगों को वापस लाने के लिए और सम्पर्क के लिए किस का साथ ले सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी साहिब तरबियत को फ़रमाया कि पर्दा केवल औरतों का ही काम नहीं है मर्दों का भी काम है। यहाँ आकर कुछ औरतों ने पर्दा कम कर दिया है ऐसे ड्रेस में आ-गई हैं जो मुनासिब नहीं हैं हुजुर ने फ़रमाया इसमें कुसूर मर्दों का है। मर्दो ने खुली इजाज़त दे दी है और ख़ुद कम्प्लेक्स का शिकार हुए हैं।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि ऐसे मामलों में मर्दों को समझाने की ज़रुरत है। हुज़ूर ने कहा मैंने मुलाकातों में पूछा है अधिकतर ने यही जवाब दिया है कि मर्दों को हमारे साथ बाज़ार में फिरते हुए शर्म आती है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि पर्दा तरक़्क़ी की ओर जाना चाहिए न कि उसमें गिरावट आए। हर एक में यह एहसास होना चाहिए कि आप उसके मर्द हैं। समाज में गिरावट नहीं होनी चाहिए। एक ठहराव के बाद क़दम ऊपर की ओर उठने चाहिएँ।

हुज़ूर ने फ़रमाया इंसान का रुझान नंगापन छुपाने की तरफ है। ड्रेस शरीफ़ाना होना चाहिए। हुज़ूर ने फ़रमाया जो पकिस्तान से आई हैं और बुर्क़ा पहने हुए आई हैं वे बुर्क़ा उतारें तो उन्हें समझाना चाहिए कि अपने बुर्क़ा का पर्दा खत्म न करें नरमी से समझाएँ और नज़र रखें।

फिर फ़रमाया जो अहमदी नमाज़ों में नहीं आते उनको मस्जिद लाना भी ज़रूरी है हर छठा खुत्बा तरबियत के ऊपर होना चाहिए और हर चौथा खुत्बा माली कुर्बानी और इबादत पर हो।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 26 मई 2006 ई.)

3 मई 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया फ़िज्जी के साथ मीटिंग

सेक्रेटरी साहिब तरबियत के प्रोग्रामों को देखकर हुज़ूर ने उन्हें हिदायत फ़रमायी कि नमाज़ बाजमाअत की ओर ध्यान दें आपने यह जायज़ा लेना है कि नमाज़ों में कितने लोग आते हैं और पाँचों नमाज़ों में क्या हाज़िरी होती है। नमाज़ों की हाज़िरी बढ़ाएं। जो पहले नमाज़ों में आते थे अब नहीं आते उनका पता करें कि क्या कारण हैं। सब जमाअतों में इसकी ओर ध्यान देने की ज़रुरत है। यदि जमाअतों से इसके बारे में आपको नतीजा पता नहीं होगा तो आप अपना आगे का प्रोग्राम नहीं बना सकते।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक बहुत बड़ा काम क़ुरआन करीम पढ़ना है और पता लगाना है कि प्रतिदिन क़ुरआन पढ़ते हैं। यह भी सेक्रेटरी तरबियत का कम है। क़ुरआन करीम पढ़ेंगे तो मालूम होगा कि क्या बातें करने वाली हैं और कौन सी बातों से मना किया गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सीरतुन्नबी के जलसों में दूसरों को बुलाया करें।

फिर फ़रमाया गहराई में जाकर जायज़ा लेना होगा कि हर जमाअत में कितने लोग हैं जो नमाज़ें नहीं पढ़ते और घर में भी नमाज़ें नहीं पढ़ते। उनका जायज़ा लें। फिर उनकी तरबियत के लिए प्रोग्राम बनाएँ। फ़रमाया जो घर में नमाज़ नहीं पढ़ता उसको घर में तो नमाज़ पढ़ाएँ। यह तरबियत करने वाले मुरब्बियों और सेक्रेट्रियों का काम है फिर फ़रमाया जमाअत की औरतों का भी तरबियत की ओर ध्यान नहीं है बहुत सी औरतें नमाज़ में नहीं आतीं तो वे अपने बच्चों को क्या सिखाएंगी माँ बच्चे की तरबियत करती है बाप तो अपने कामकाज के बारे में घर से बाहर होता है। फिर फ़रमाया जो मर्कज़ी जलसे होते हैं उनमें ऐसे प्रोग्राम और विषय हों जो तरबियत पर हों। मर्द स्वयं भी नमाज़ें पढ़ें और अपनी औरतों को भी पढ़ाएँ और अपने बच्चों को भी पढ़ाएँ स्वयं कुरआन करीम पढ़ें घर में औरतों को भी पढ़ने को कहें और बच्चों को भी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि तरबियत का सबसे बड़ा विषय यह है कि पति-पत्नी के आपस के रिश्ते ठीक होने चाहिए। शादियाँ होती हैं फिर अलगाव हो जाता है ये तरबियत की समस्याएँ हैं उनको हल करना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब किसी को सज़ा मिलती है और एलान होता है तो फिर उनको शर्मिंदगी होती है। यह सारी तरबियत की बातें हैं जो जमाअत के अमीर/ मुबल्लिगीन/ और तरबियत के सारे सेक्रेटरियों का काम है। यदि तरबियत हो तो फिर ग़लतियाँ भी नहीं होतीं और शर्मिंदगी भी नहीं होगी।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 16 मई 2006 ई.)

7 मई 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह न्यूज़ीलैंड के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने क़ायद तरबियत से पूछा आपकी स्कीम और प्रोग्राम क्या हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके पास विधिवत यह रिकॉर्ड होना चाहिए कि कितने अंसार बाजमाअत नमाज़ पढ़ते हैं, कितने प्रतिदिन तिलावत करते हैं कितने हैं जो अपने बच्चों की तरबियत की ओर ध्यान देते हैं, हुज़ूर अनवर ने कहा कि अंसार को कहें कि घरों में दीन की बातें किया करें मसीह मौऊद की बातें हों उनकी किताबें पढ़ें। घरों में दीनी माहौल हो। बच्चे नमाज़ें पढ़ें और क़ुरआन करीम की तिलावत करें। अन्सार को इस तरफ बहुत ध्यान देना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपने नई नस्ल को बचाना है तो आपको उनकी तालीम और तरबियत के लिए स्कीम बनानी पड़ेगी।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 30 जून 2006 ई.)

7 मई 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया न्यूज़ीलैंड के साथ मीटिंग

हुज़ूर ने मोहतमिम तरबियत से उनके शोबा के अन्तर्गत होने वाले कामों के बारे में फ़रमाया कि आपको मालूम होना चाहिए कि कितने खुद्दाम पाँचों वक्त नमाज़ पढ़ते हैं और कितने खुद्दाम बाजमाअत नमाज़ पढ़ते हैं। कितने खुद्दाम कुरआन करीम पढ़ते हैं और कितने खुद्दाम रोज़ाना तिलावत कुरआन करीम करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया की असल चीज़ यह है की नमाज़ पढ़ो कुरआन करीम पढ़ो। फिर फ़रमाया तरबियत के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों से विभिन्न शीर्षकों पर उद्धरण निकाल कर खुद्दाम को दें। जैसे माँ–बाप के हुकूक़, समाज सेवा के काम, नमाज़, कुरआन करीम, माल की कुर्बानी, सच बोलना, गुस्से में न आना, अमानतदारी इत्यादि। तालीमी इज्लासों में भी पढ़े जाएँ और तालीम निसाब में भी हों। फिर मोहतमिम तरबियत साहिब को भी आदेश दिया कि पहले सारा विवरण तैयार करें कि कितने खुद्दाम को नमाज़ सादा और तर्जुमा सहित आती है और इसी तरह कुरआन भी। इस विवरण को तैयार करने के पश्चात फिर आप तरबियत कर सकते हैं और बेहतर प्रोग्राम बना सकते हैं। फिर फ़रमाया कुछ लडके ग़ैर अहमदी लड़कियों से शादी कर लेते हैं इसी तरह कुछ लड़कियां भी बाहर शादी कर लेती हैं दोनों हालातों में नस्ल ख़राब होती है। इसलिए तरबियत के शोबा को बहुत ज़्यादा सरगर्म होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया की सारी व्यस्तताओं के बावजूद पाँच नमाज़ें तो पढ़नी ही पढ़नी हैं। जो आदमी पाँच नमाज़ें पढ़ने वाला होगा उसकी तरबियत हो जाएगी। इसी तरह जो आपके इज्लासों में विधिवत आएगा। मस्जिद से उसका लगाव होगा उसकी भी तरबियत हो जाएगी। फिर फ़रमाया महीने में कुरआन करीम हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों पर आधारित एक दो पेज का पम्फलेट छाप कर खुद्दाम को दे दिया करें जिसमें विभिन्न विषयों पर तरबियती लेख भी शामिल हों। जो खादिम पीछे हटा हुआ है उससे सम्पर्क नहीं है उसको किसी दोस्त के द्वारा उसे अपने निकट लाएँ। आवश्यक नहीं कि ओहदेदार ही जाए और उससे सम्पर्क करे असल तात्पर्य यह होना

चाहिए कि वह जमाअती निज़ाम में शामिल हो जाए और मस्जिद से उसका सम्बन्ध हो जाए।

हुज़ूर ने फ़रमाया कुर्बानी दिए बिना संसार में कोई तरक़्क़ी नहीं कर सकता, क़ुर्बानी करेंगे तो तरक़्क़ी करेंगे और आपको क़ुर्बानी करनी पड़ेगी। प्रोग्राम बनाएँ और काम करें मज्लिस आमला मिलजुल कर बैठे और हल निकाले कि किस तरह किया जाए। लगातार सम्पर्क रखने होंगे। पहली बात तो यह है कि ख़ुदा से रिश्ता जोड़ें, नमाज़ों की आदत डालें कुरआन करीम की तिलावत की आदत डालें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून 2006 ई.)

7 मई 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया न्यूज़ीलैंड के साथ मीटिंग

सेक्रेटरी साहिब तरबियत ने बताया कि महीने में एक तरबियती इज्लास होता है। हुज़ूर अनवर ने पूछा जो आपके इज्लासों में नहीं आते उनके लिए आपने क्या किया है। सेक्रेटरी तरबियत ने बताया कि हम घरों का दौरा करते हैं ध्यान दिलाते हैं और इस बात का जायज़ा लेते हैं कि नमाज़ें पढ़ी जाती हैं कि नहीं, हुज़ूर अनवर के खुत्बात सुने जाते हैं कि नहीं। इस तरह से कई लोग इज्लासों में आने शुरू हो गए हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नमाज़ों के साथ साथ कुरआन करीम की तिलावत का भी जायज़ा लें। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इस बात का भी जायज़ा लिया करें कि डिशें तो लगाई गई हैं लेकिन कितने लोग और परिवार खुत्बा सुनते हैं इसकी रिपोर्ट हर माह आपको आनी चाहिए। कि कितनों से खुत्बा और दूसरे प्रोग्राम सुने हैं।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून 2006 ई.)

13 मई 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जापान के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तरबियती विषयों में विशेष रूप से हर महीने एक मीटिंग अवश्य होनी चाहिए और देखना चाहिए कि नमाज़ों के बारे में जमाअत ने क्या ध्यान दिया है और जो कोशिश की है उसका क्या परिणाम निकला।

हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिगों को आदेश देते हुए कहा कि आपका हर चौथा ख़ुत्बा तरबियत पर होना चाहिए और हर छठा ख़ुत्बा धन की क़ुर्बानी पर होना चाहिए। (सन 2012 में इस सन्दर्भ में हुज़ूर अनवर का आदेश नाज़िर साहिब आला कादियान के नाम प्राप्त हुआ कि "भारत की तमाम जमाअतों में मुक़र्रर मुअल्लिमों और मुबल्लिगों को यह हिदायत भिजवा दे कि अब वे हर ख़ुत्बा जुमा के अवसर पर ख़लीफा-ए-वक्त के पिछले ख़ुत्बा जुमा का सारांश सुनाया करें ब-हवाला QND 3307\ 29-08-2012)

फिर फ़रमाया कि यह भी जायज़ा लें कि *M.T.A* पर कितने लोग ख़ुत्बा सुनते हैं और उसकी रिपोर्ट भी लिया करें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून 2006 ई.)

7 जून 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला जमाअत अहमदिया जर्मनी के साथ मीटिंग

मीटिंग में हुज़ूर विभिन्न शोबों का जायज़ा लेने के बाद विभिन्न तरबियती और इन्तिज़ामी विषयों पर नसीहतें कीं और अपनी कमजोरियों को दूर करने की ओर ध्यान दिलाया। जिनका सारांश निम्नलिखित हैं:-

हुज़ूर ने फ़रमाया ओहदे को खिदमत समझकर निभाएँ और अफसर की बजाए खिदमत गुज़ार की सोच अपने दिलों में बिठाएँ

इस सम्बन्ध में हुज़ूर ने मीर दाऊद अहमद साहिब का उदाहरण दिया कि उन्होंने जलसा सालाना पर अपने टाईटल "अफसर जलसा सालाना" को बदल कर ख़ादिम जलसा सालाना लिखवाना शुरू कर दिया था।

हुज़ूर अनवर ने ओहदेदारों के ख़िलाफ़ शिकायतों के जायज़ा का ढंग समझाते हुए फ़रमाया कि ऐसी शिकायतों पर कमेटियाँ बनाने की बजाय खत के द्वारा गुप्त रूप से ओहदेदारों से पूछना चाहिए कि कहीं आप तो इस में शामिल नहीं फिर ओहदेदारों को चाहिए कि वे अपना मुहासबा करते हुए यदि शिकायतों के घेरे में आते हैं तो अपना सुधार कर लें ताकि उनकी या उनकी किसी सन्तान के कारण जमाअती वकार को झटका न लगे और यदि कोशिश के बावजूद वह अपने और अपने परिवार के अन्दर कोई इस्लाह न कर सकें तो फिर तक़वा का तक़ाज़ा है कि अपने आप को उस खिदमत से अलग कर लें। हुज़ूर ने ओहदे का ख्याल रखने की ओर विशेष ध्यान दिलाया और फ़रमाया कि अपने से ऊँचे ओहदेदारों का सम्मान और उनकी आज्ञापालन बहुत आवश्यक है। यदि आपको अपने से बड़े ओहदेदारों की ओर से कोई काम सुपुर्द किया जाता है और आपको उस से शिकायत है तो चाहिए कि पहले आज्ञा का पालन करते हुए वह काम करें फिर ओहदेदार को बताएँ कि मैं मर्कज़ या ख़लीफा-ए-वक़्त को शिकायत करूँगा कि आपने अमुक बात ग़लत की।

हुज़ूर ने ओहदेदारों को अपना अच्छा नमूना पेश करने की भी नसीहत फ़रमाई। फ़रमाया कि कभी-कभी ओहदेदारों की अपनी घरेलू ज़िन्दगी में नमूने ठीक नहीं होते। अपनी बहुओं, दामादों, बच्चों और बीवियों से झगडे होते हैं। ऐसी कमजोरियों को भी दूर करने की कोशिश करनी चाहिए और यदि न कर सकें तो फिर

अपने आप को जमाअती खिदमत से अलग कर लें। हुज़ूर ने नेकी के कामों में परस्पर सहयोग करने की नसीहत करते हुए फ़रमाया कि उद्देश्य तो सबका एक ही है मिलकर काम किया करें। जैली तन्ज़ीमें जमाअती निज़ाम को मज़बूत करने का कारण होती हैं।

हुज़ूर ने एक तरबियती बात की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि अपने इज्लासों और मज्लिसों की बातों की हिफाज़त किया करें। यह मूल बात है मज्लिसों की बातें अमानत होती हैं इसलिए उनका ख्याल रखना चाहिए।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 जुलाई 2006 ई.)]

9 जून 2006 ई.

खुत्बा जुमा में ओहदेदारों को नसीहतें

इसी प्रकार ओमरा और मर्कज़ी ओहदेदारों को भी मैं कहता हूँ कि यदि वे चाहते हैं कि जमाअत के सहयोग और आज्ञापालन के स्तर बढ़ें तो स्वयं ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के फ़ैसलों पर अमल इस तरह करें जिस तरह दिल की धड़कन के साथ नब्ज चलती है। यह स्तर हासिल करेंगे तो फिर देखें कि एक साधारण अहमदी भी किस तरह आज्ञापालन करता है..... मक़ामी अतः हर स्तर के ओहदेदार चाहे वे आमला के मेम्बर हों या सदर जमाअत हों या रीजनल अमीर हों या मर्कज़ी आमला के मेम्बर हों या अमीर जमाअत हों अपनी सोच को उस स्तर पर बढ़ाएँ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुक़र्रर फ़रमाया है कि अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और अहंकारों को ज़िबह करो.........

यहाँ मैं मुरब्बियों और मुअल्लिमों को एक और बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि यदि अमीर या ओहदेदार में कोई ऐसी बात देखें जो जमाअती परम्पराओं के खिलाफ़ हो तो

ओहदेदारों और अमीरों को अकेले में ध्यान दिलाएँ...... और यदि वे ओहदेदार और अमीर फिर भी अपनी बात पर ज़ोर दें और आप यह समझते हों कि जमाअती मफ़ाद प्रभावित हो रहा है तो फिर खलीफ़ा वक़्त को सूचित कर दें। लेकिन यह बातें कभी भी जमाअत में नहीं फैलानी चाहिए कि मुरब्बी और अमीर की आपस में सही तालमेल नहीं है या आपस में सहयोग नहीं है। दूसरे यह भी मुरब्बियों को ख्याल रखना चाहिए कि मुरब्बी के लिए कभी भी जमाअत के किसी आदमी की सोच में यह बात नहीं पैदा होनी चाहिए कि अमुक मुरब्बी या मुबल्लिग़ के अमुक व्यक्ति से बड़े करीबी सम्बन्ध हैं। मुरब्बी मुअल्लिम या किसी भी मर्कज़ी ओहदेदार का यह काम है कि अपने आप को हर मस्लहत से ऊपर रखकर हर रिश्ते को पीछे डालकर जमाअती मफ़ाद के लिए काम करना है।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून 2006 ई.)

9 जून 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला लजना इमाइल्लाह जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने एक बार फिर पर्दे की जरूरत पर जोर देते हुए फ़रमाया कि लड़कियों के दिमाग़ में यह बात डालें कि आपने पर्दा इसलिए करना है कि यह ख़ुदा का आदेश है। फिर फ़रमाया अगर जमाअती परम्परा पर कायम रहेंगी तो कोई कम्प्लेक्स नहीं होगा और इसी से फिर तब्लीग़ के रास्ते खुलेंगे। कई बच्चियां पाकिस्तान से शादी होकर यहाँ आती हैं वहाँ वे बुर्क़ा पहनती हैं लेकिन यहाँ आते ही उतर जाता है। आपने फ़रमाया यह बेहयाई है यह व्यक्तिगत कम्प्लेक्स के आधार पर हो

सकता है और पति के कहने पर भी। अगर जर्मन औरत अहमदी होने के बाद अच्छे लिबास में आ सकती है तो उन्हें पूरा पर्दा करने में क्या हर्ज है? फ़रमाया आजकल *Text Massage* का रिवाज चल पड़ा है यह भी जानने वालों के सिवा कहीं नहीं होना चाहिए। कभी-कभी सहेलियां आगे नंबर दे देती हैं इसलिए इस बात की ओर भी ध्यान देने की ज़रुरत है।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 जुलाई 2006 ई.)

10 जून 2006 ई.

क़ायदीन, रीजनल क़ायदीन और नेशनल मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने मोहतमिम साहिब तरबियत से फ़रमाया कि खुद्दाम के झगड़े दूर करने के लिए नसीहत करते रहा करें बहुत से लोग बाहर अच्छे होते हैं लेकिन अपने घर में हालत ख़राब रखते हैं। फिर फ़रमाया जिसकी तरबियत करना चाहते हो उसका अच्छा दोस्त ढूंढकर उसकी हालत की इस्लाह की कोशिश किया करें। फ़रमाया इसका उददेश्य यह है कि लोगों की इस्लाह हो और उन्हें निजाम में पिरोया जाए।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 जुलाई 2006 ई.)

14 जून 2006 ई.

नेशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर ने शोबा तरबियत और तालीमुल क़ुरआन के जायज़ा के दौरान फ़रमाया कि पहले मस्जिद और नमाज़ के सेन्टरों की संख्या मालूम करें। फिर मालूम करें कि कितनी

मज्लिसों में बाजमाअत नमाज़ का इन्तिज़ाम है और हर जगह कम से कम दो नमाज़ें तो बाजमाअत होनी चाहिएँ। हुज़ूर अनवर से बताया गया कि मार्च में हमने हफ्ता तरबियत मनाया था और अप्रैल की रिपोर्ट से पता चला है कि नमाज़ें अदा करने वालों और तिलावत करने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अब फिर रिपोर्ट मंगवाएँ और देखें कि यह तब्दीली केवल हफ्ता तरबियत के दौरान थी या बाद में भी जारी है। अंसार को बच्चों की तरबियत की ओर ध्यान दिलाते हुए हुज़ूर ने फ़रमाया सफ़ दोयम के अन्सार की बड़ी तादाद के बच्चे छोटे हैं बच्चों की अच्छी तरबियत करें ताकि वे अच्छे चरित्र वाले बन सकें। मुकर्रम अमीर साहिब की दरख्वास्त पर एक बार फिर हुज़ूर अनवर ने अगली नस्ल को निजामे जमाअत से जोड़ने के लिए अन्सार को नसीहत फरमाई कि बच्चों की तरबियत पर विशेष ध्यान दें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 14 जुलाई 2006 ई.)

5 मई 2008 ई.

नेशनल मज्लिस आमला U.S.A के साथ मीटिंग

सेक्रेटरी साहिब तरबियत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि तरबियत के लिए स्पेशल प्रोग्राम क्या है। इस पर सेक्रेटरी साहिब ने उत्तर दिया कि तरबियती सेमिनार की एक सीरीज़ है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अगर जमाअतों में सेक्रेट्रियाने तरबियत *Active* हों तो आप आसानी से फ़ीडबैक हासिल कर सकते है। अतः आप अपने सेक्रेट्रियाने तरबियत को *Active* करें। सेक्रेटरी साहिब तरबियत ने नेशनल इस्लाही कमेटी के बारे में भी अगवत कराया। हुज़ूर ने फ़रमाया अगर सेन्टर और जमाअतों में इस्लाही कमेटी तत्पर और

सरगर्म हो तो *Matrimonial* प्राब्लम न हों जो आजकल बहुत ज़्यादा हो गए हैं।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि इस्लाही कमेटी में गत वर्षों में जो केस आए हैं और इस साल जो आए हैं क्या यह संख्या बढ़ी है या घटी है?

इस पर हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट पेश करते हुए बताया गया कि जो केस आ रहें हैं वे अलार्मिंग हैं चिंता है और हर माह आ रहें हैं। हुज़ूर अनवर ने कहा कुछ ऐसे केस उमूरे आम्मा और मुबल्लिगों के संज्ञान में होंगे। इस बारे में पूरी मालूमात हासिल करें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 15 अगस्त 2008 ई.)

इस्लाह व तरबियत के चार बुनयादी साधन

मोहतरम वकील साहिब तामील व तन्फ़ीज़ लन्दन ने क़ादियान और भारत के अहमदियों की तरबियत के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्य्दहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का निम्न लिखित आदेश भिजवाया जिसमें हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है कि

"जमाअती तौर पर जो फ़ैसले किये जाते हैं उन-पर तुरंत पालन का नमूना नज़र आना चाहिए लेकिन पिछले 25 सालों से क़ादियान के लोगों में यह नमूना नज़र नहीं आ रहा...... यह बातें इस मामले को दर्शाती हैं कि आप लोगों में से किसी ने भी उनकी तरबियत के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियाँ नहीं निभाईं न नज़ारत इस्लाह व इर्शाद ने, न ही सदारत उमूमी ने, न ही खुद्दामुल अहमदिया ने अपनी जिम्मेदारियां अदा कीं और न ही उनमें आज्ञा पालन की भावना पैदा की। अल्लाह तआला आप

लोगों की हालत पर रहम करे। अपनी ज़िम्मेदारियाँ सही रंग में अदा करने और वहाँ के लोगों की तरबियत करने की तौफीक़ दे।

(ब हवाला *WTT 7947/ 17-07-2015)*

हुज़ूर अनवर अय्य्दहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह फ़िक्र अंगेज़ आदेश भिजवाते हुए मोहतरम वकील साहिब तामील व तन्फ़ीज़ लन्दन ने तहरीर फ़रमाया है कि

"हुज़ूर अनवर अय्य्दहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का उपरोक्त आदेश आप सब मर्कजी ओहदेदारों के लिए चिंताजनक है। यदि इस मौक़े पर भारत के सभी अहमदियों की तरबियत के लिए मुनासिब और ज़रूरी इंतेज़ाम शीघ्र न किये गए तो फिर सम्भव है की अंसार के साथ-साथ खुद्दाम व अत्फाल में भी तरबियत में बहुत कमजोरियां रह जाएँ जिसके ज़िम्मेदार माँ-बाप के साथ-साथ जमाअती ओहदेदार भी होंगे इस सम्बन्ध में आगे के लिए हुज़ूर अनवर से रहनुमाई लेने के बाद आदेशानुसार तहरीर है कि

1. "सारी मर्कज़ी मस्जिदों और जमाअती हलकों की मस्जिदों में पाँचों वक़्त बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी के लिए भरपूर हाजिरी के साथ विशेष ध्यान दिया जाए। और हलक़ा के तमाम जमाअती और ज़ैली तन्ज़ीमों के ओहदेदार जायज़ा लेकर नोट करें कि हलक़ा के कौन कौन से लोग नमाज़ों में सुस्त हैं। सुस्त पाये जाने वाले लोगों को हलक़ा के जमाअती व ज़ैली तन्ज़ीमों के ओहदेदार मुनासिब और प्रभावशाली ढंग से ध्यान आकृष्ट कराएँ और उन ओहदेदारों का ध्यान दिलाने का ढंग इतना अच्छा और प्रभावकारी होना चाहिए कि सुस्त लोगों को अपनी कमज़ोरी का एहसास हो और वे अपना सुधार कर लें। इसके लिए सबसे पहले

मर्कज़ी और इलाका के स्तर के जमाअती और ज़ैली तन्ज़ीमों के ओहदेदारों को अपना नमूना पेश करना होगा। यह नहीं हो सकता कि ओहदेदार या उनके बच्चे ख़ुद तो नमाज़ों में कमज़ोर हों और जमाअत के दूसरे लोगों और उनके बच्चों को बाजमाअत नमाज़ का आदेश दें।"

2. "हर मर्कज़ी और हलक़ा की मस्जिदों में फ़ज्र और अस्र कि नमाज़ के बाद प्रतिदिन क़ुरआन और हदीस के दर्स का इन्तिज़ाम होना चाहिए इस अवसर पर भी अधिक से अधिक लोगों कि उपस्थिति के लिए हलक़ा सारी जमाअती और ज़ैली तन्ज़ीमों की इन्तज़ामिया कोशिश करे।"

3. "ख़लीफा-ए-वक़्त के खुत्बा जुमा ईदैन और विभिन्न देशों के जलसों और इज्तिमाओं के अवसर पर दिए जाने वाले लेक्चरों को लोगों को सुनाने और दिखाने का भी जमाअती इन्तिज़ामिया की ओर से प्रबन्ध होना चाहिए। इसके लिए भी सब से पहले समस्त मर्कज़ी जमाअती और ज़ैली तन्जीमों के ओहदेदारों को अपने बच्चों के साथ इन अवसरों पर हाज़िर रहकर अपना नमूना पेश करना होगा। इसके बाद जमाअत के अन्य लोगों को उसके लिए प्रेरित करें।"

4. "हिन्दुस्तान के अहमदियों की तरबियत के लिए जमाअती अख़बार साप्ताहिक बदर उर्दू के अतिरिक्त हिन्दी और कई स्थानीय भाषाओं में भी प्रकाशित किये जा रहें हैं। इन समस्त एडिशनों से जमाअत के लोग कितना लाभ उठा रहें हैं इसका भी जायज़ा लिया जाए और कोशिश की जाए कि हर घर में इस ऐतिहासिक जमाअती अख़बार का पर्चा अवश्य जाए।"

इन हिदायतों की तामील में तहरीर है कि

(क) क़ादियान और भारत की सारी मर्कज़ी और मोहल्ला स्तर की सारी मस्जिदों और नमाज़ सेंटरों में आदेशानुसार पाँचों वक़्त की नमाज़ों के अवसर पर भरपूर हाज़िरी के लिए सारी मरकज़ी जमाअती और जैली तन्ज़ीमों के ओहदेदारों के द्वारा उपरोक्त हिदायतों की रोशनी में कार्यवाही शुरू कर दें। इसी तरह नमाज़ फज्र और अस्र के बाद क़ुरआन व हदीस के दर्स का भी सारी मस्जिदों / नमाज़ सेन्टरों में विशेष रूप से इन्तिज़ाम कराएँ और उस मौक़े पर भी भरपूर हाजिरी के लिए उपरोक्त हिदायतों की रोशनी में प्रभावी कार्यवाही करवाएँ।

(ख) हर जुमा के अवसर पर ख़लीफा-ए-वक़्त का *LIVE* खुत्बा जुमा और इसी तरह ईदैन और विभिन्न देशों के जलसों और जैली तन्ज़ीमों के इज्तामाओं के अवसर पर दिए गए ख़िताब जमाअत के लोगों को सामूहिक तौर पर दिखाने के लिए भारत की तमाम जमाअतों में मर्कज़ी और मोहल्ला स्तर की मस्जिदों / नमाज़ सेंटरों में *MTA* का प्रबन्ध करवाएँ और इन सभी अवसरों पर विशेष रूप से क़दियान में अपने अपने मुहल्लों की मस्जिदों में उस मोहल्ले के रहने वाले सारे मर्कज़ी अफ़्सर कारकुन जमाअती और जैली तन्ज़ीमों के ओहदेदार अपने-अपने बच्चों के साथ खुत्बा जुमा सुनने के लिए सब से पहले स्वयं हाज़िर रहें और इस अवसर पर हाज़िर न रहने वाले सभी लोगों का, हल्का के सभी ओहदेदार गुप्त रूप से रिकार्ड तैयार करेंगे और फिर बाद में ऐसे लोगों का ध्यान आकृष्ट कराने और उनकी इस्लाह हेतु हल्का के ओहदेदार और इस्लाही कमेटियां मिल कर कार्यवाही करेंगे।

(ग) साप्ताहिक बदर के विभिन्न भाषाओँ के एडीशन भारत के हर अहमदी के घर तक पहुँचाने के लिए भरपूर कोशिश करें और ऐसी दूसरी स्थानीय भाषाएँ जिनमें बदर के एडीशन जारी करने की काफ़ी ज़रुरत मालूम हो उन भाषाओँ में भी बदर के एडीशन जारी करवाने के सम्बन्ध में विधि के अनुसार कार्यवाही करें।

☆ उपरोक्त सारी हिदायतें क़दियान और भारत की अन्य सारी जमाअतों में इस ताकीद के साथ सर्कुलर करवा दें कि यह सारी हिदायतें आगे हलक़ों में भी जमाअती और जैली तन्ज़ीमों की इन्तिज़मिया की ओर से भी सर्कुलर करवाई जाएँ और उनके मुताबिक फ़ौरन अमल दरामद शुरू करवाया जाए और उपरोक्त सभी विषयों के सम्बन्ध में कार्य वाही के बारे में माहवार रिपोर्ट देने के लिए अब हलक़ा मज्लिस और जमाअती सतह की मासिक रिपोर्टों में एक-एक कलम बढ़ा दिया जाए और सारे समबंधित ओहदेदार इन विषयों के बारे में भी हर माह अपनी रिपोर्टों में अपनी कारगुजारी की तफ़्सील दर्ज किया करें।

इस तरह उपरोक्त विषयों के बारे में हलक़ा की सतह के ओहदेदारों की कार्यवाही करने का मतलब यह कदापि नहीं है कि हलक़ा से ऊपर की सतह के तमाम जमाअती व जैली तंजीमों के ओहदेदारों की कोई ज़िम्मेदारी उपरोक्त विषयों के सिलसिले में नहीं है आखिरी ज़िम्मेदारी हल्का से ऊपर की सतह के तमाम ओहदेदारों की ही है। लिहाज़ा यह सब भी अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का हक़ अदा करें और पूरी निगरानी रखें। भारत की जमाअतों में उपरोक्त हिदायतों की रोशनी में सारे इन्तिज़ाम और कार्यवाही पूरी करवाने की बुनियादी ज़िम्मेदारी सदर / अमीर जमाअत और जैली तन्ज़ीमों के क़ायद / जईम / सदर लजना की

होगी। इसी तरह क़ादियान में अमीर मुक़ामी और तीनो मर्कज़ी जैली तंजीमों के सदर अपने-अपने दायरा कार के अन्दर ज़िम्मेदार होंगे। बहरहाल उपरोक्त बातों के सम्बन्ध में सकारात्मक नतीजे उसी समय आना शुरू होंगे जब निचली सतह से लेकर ऊपर की सतह के तमाम ज़ैली और जमाअती ओहदेदार दुआओं के साथ अपना और अपने बच्चों का नमूना पेश करते हुए इस बारे में ग़ैर मामूली रंग में कम करेंगे। अल्लाह तआला आप सबको इसकी तौफीक़ अता फरमाए।

(बहवाला खत WTT 8420/12-08-2015)

अतः उपरोक्त उसूली हिदायतों के बारे में एक मर्कज़ी कमेटी में मश्वरा करके उपरोक्त हिदायतें लिखकर हर हिदायत की तामील के लिए एक लाह्य अमल भी तजवीज़ करके समस्त ज़िलई अमीरों, सदर साहिबान जमाअत और मुबल्लिगीन किराम को अगस्त 2015 में सर्कुलर भिजवा दिया गया था।

इस मश्वरा और लाह्य अमल की रिपोर्ट हुज़ूर अनवर के समक्ष प्रस्तुत होने पर हुज़ूर अनवर ने आदेश दिया कि :-

"ठीक है जो हिदायतें भिजवाई गई हैं उनके अनुसार तुरंत अमल दरामद कराएँ। अल्लाह तआला आप सब ओहदेदारों को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से अदा करने की तौफीक़ अता फरमाए और हर क़दम पर अपनी सहायता और समर्थन प्रदान करता रहें, अमीन।"

(बहवाला खत WTT 8587/18-08-2015)

उपरोक्त 4 उसूली हिदायतों पर अमल दरामद करने और उनसे ठोस नतीजे हासिल करने के लिए नज़ारत उलिया के मासिक रिपोर्ट फार्म में इसके लिए एक क़ालम बढ़ाया गया है। जिसका नमूना अन्त में पृष्ठ नम्बर (36) पर दर्ज किया गया है।

फिर भारत की जमाअतों में बढ़ रहे तरबियती मसाइल को समय पर हल करने के लिए हुज़ूर अनवर ने क़ादियान में एक मरकज़ी इस्लाही कमेटी क़ायम फरमाई है जिसका सदर नाज़िर आला क़ादियान और सेक्रेटरी मुकर्रम नाज़िर साहिब इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया को मुक़र्रर फ़रमाया है और हिन्दुस्तान की तमाम जमाअतों में निम्न लिखित विवरण के अनुसार इस्लाही कमेटियाँ क़ायम करने की हिदायत फ़रमाई है :-

क्रमांक	नाम ओहदा	हलक़ा कि सतह पर	मक़ामी जमाअत की सतह पर
1	सदर इस्लाही कमेटी	सदर हल्का	मक़ामी सदर / अमीर जमाअत
2	सेक्रेटरी इस्लाही कमेटी	सेक्रेटरी इस्लाह व इर्शाद हलक़ा	सेक्रेटरी इस्लाह व इर्शाद मक़ामी
3	मेम्बर	सेक्रेटरी उमूरे आम्मा हल्का	सेक्रेटरी उमूरे आम्मा मक़ामी
4	मेम्बर	जईम हलका खुद्दामुल अहमदिया	मुहतमिम मक़ामी मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया
5	मेम्बर	जईम हलका अन्सारुल्लाह	जईम आला अन्सारुल्लाह मक़ामी
6	मेम्बर	सदर लजना हलका	सदर लजना मक़ामी
7	मेम्बर	मुबल्लिग़ / मुअल्लिम हलका	मुरब्बी लोकल अंजुमन

(बहवाला खत WTT 226/11-11-2015)

इस्लाही कमेटी की हर माह बाक़ायदगी से मीटिंग करने और रिपोर्ट देने के लिए हुज़ूर अनवर की हिदायत की तामील में मर्कज़ी इस्लाही कमेटी ने एक रिपोर्ट फ़ार्म तैयार करके मंजूरी हासिल कर ली है जो अन्त में पृष्ठ (37,38) पर दर्ज है ।हिन्दी और अंग्रेजी में भी इस फ़ार्म का अनुवाद करवाकर भिजवाया जा रहा है।

अब ज़रुरत है अमल दरामद करने और करवाने की। अल्लाह तआला सारे ओहदेदारों को अपने फज़्ल से इसकी तौफीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

....*....*....*....

सदर / अमीर जमाअत का मासिक कारगुजारी रिपोर्ट फ़ार्म, पृष्ठ 4 (प्रपत्र)

- **हुज़ूर अनवर अय्य्दहुल्लाहो तआला की चार उसूली हिदायतों की तामील में की गई कोशिश की रिपोर्ट के संबंध में विशेष स्तम्भ**

क्रमांक	इस्तफ्सार	रिपोर्ट	विवरण
1	क्या तमाम जमाअती ओहदेदारों और उनके बच्चों की जिन पर नमाज़ फर्ज़ है सूची तैयार कर ली गई है ?		
2	क्या इसके मुताबिक नमाज़ ब जमाअत और दर्सुल क़ुरआन/ हदीस/ मल्फूज़ात में उनके शामिल होने की निगरानी की जा रही है ?		
(I)	कितने ओहदेदार और उनके बच्चे पाबंद हो चुके हैं ? (नं 1 और 2 से सम्बंधित)		
(II)	जमाअत के अन्य सदस्यों की हाजिरी की क्या दशा है ? (नं 1 और 2 से सम्बंधित)		
3	क्या हुज़ूर अनवर के खुत्बा जुमा और अन्य खिताबों के *LIVE* सुनने सुनाने का इन्तिज़ाम है ?		
(I)	मस्जिदों / नमाज़ सेन्टरों में कितने ओहदेदार और उनके बच्चे जमा होकर हुज़ूर अनवर का खुत्बा सुन रहें हैं ? (नं 3 से सम्बंधित)		
(II)	जमाअत के कितने अन्य सदस्य इकट्ठे होकर खुत्बा सुन रहें हैं? (नं 3 से सम्बंधित)		
4	कितने घरों में अख़बार बदर मंगवाया जा रहा है ?		
(I)	शेष घरों में अख़बार लगवाने की क्या कार्यवाही की गई ?		

इस्लाही कमेटी रिपोर्ट फ़ार्म

जमाअत का नाम : जमाअत के सदस्यों की संख्या :

रिपोर्ट की अवधि : सन: 2016 ई.

नोट :- इस्लाही कमेटी में सेक्रेटरी इस्लाह व इर्शाद, सेक्रेटरी उमूरे आम्मा, क़ायद खुद्दामुल अहमदिया, ज़ईम अन्सारुल्लाह और सदर लजना इमाइल्लाह की ओर से निम्नलिखित विषयों की रिपोर्ट भेजी जाए कि अमुक ख़ादिम तिफ्ल अन्सार व लजना में यह कमज़ोरी है।

नमाज़	नमाज़ न पढ़ने वालों की संख्या .... कितने नमाज़ न पढ़ने वालों से सम्पर्क किया गया? .... जुमा न पढ़ने वालों की संख्या .... कितने जुमा न पढ़ने वालों से संपर्क किया गया? .... की गई कार्यवाही का नतीजा	
लाइव ख़ुत्बा जुमा व इज्लासात	मस्जिद में आकर खुत्बा जुमा न सुनने वालों की संख्या .... कितने लोगों से सम्पर्क किया गया?................ इज्लासों में शामिल न होने वालों की संख्या... की गई कार्यवाही का नतीजा	
झगड़े	झगड़ों की कुल संख्या .... पति पत्नी की रंजिश के संबंध में .... जायदाद व लेन-देन के संबंध में .... आपसी झगड़ों के संबंध में .... एक दूसरे पर मुकद्दमों की संख्या .... जमाअत के कितने लोगों ने कोर्ट का रुख किया? .... इस सन्दर्भ में की गई इस्लाही कार्यवाही का नतीजा	

रिश्ता–नाता	कितने लोगों ने दूसरों में रिश्ते किए?................ कितने लोग ऐसे रुझान रखते हैं (नाम रिपोर्ट सहित)... समझाने के लिए की गई कार्यवाही का नतीजा...	
अतिरिक्त विषय	ओहदेदारों और मुबल्लिग़ / मुअल्लिम का आपस में रिश्ता कैसा है?.. बेपर्दगी वाली लजना की संख्या .... इन्टरनेट का ग़लत प्रयोग करने वालों की संख्या .... बुरी संगत अपनाने वालों की संख्या .... नशे के अभ्यस्त लोगों की संख्या .... इन सब बातों के सुधार के लिए की गई कोशिश का नतीजा	
समीक्षा रिपोर्ट :–		
नाम सदर इस्लाही कमेटी : मोबाइल नम्बर : पूरा पता :	हस्ताक्षर मुहर सहित : तारीख ई.मेल:– पिनकोड	